अभिनवधारा ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL- 1
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

SRIJANSHODH2026-72

हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला का व्यावसायिक स्वरूप : पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियों का अध्ययन।

बरखा **(T.G.T Art Education)**
शोधार्थी- ललित कला विभाग स्वामी विवेकानंद, सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ उत्तर प्रदेश
डॉक्टर पवनेंद्र कुमार तिवारी, सहायक प्रोफेसर चित्रकला विभाग, शोध निदेशक
ईमेल :- neeraj2_5@yahoo.com | व्हाट्सएप मोबाइल नंबर :- 9870533342

सारांश (Abstract)

भारतीय चित्रकला की समृद्ध परम्परा में हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकलाओं का विशिष्ट स्थान है। चम्बा, गुलेर, कांगड़ा, बसोहली, मंडी और बाघल (अर्की) जैसी चित्रशैलियाँ अपनी कलात्मक विशिष्टताओं, विषय-वस्तु, रंग-योजना तथा सांस्कृतिक व पारंपरिक अभिव्यक्ति के कारण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखती हैं। इन चित्रकलाओं का विकास केवल कलात्मक प्रतिभा तक सीमित नहीं था, बल्कि इसके पीछे स्थानीय समाज में विकसित पारंपरिक कला और शिल्प ज्ञान-प्रणालियों की अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गुरु-शिष्य परम्परा, प्राकृतिक रंगों का प्रयोग व निर्माण, स्थानीय संसाधनों का उपयोग, धार्मिक और सांस्कृतिक कथाओं का ज्ञान तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित तकनीकी कौशल या दक्षता ने इस चित्रकला को एक विशिष्ट रूप प्रदान किया है।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण, पर्यटन उद्योग, डिजिटलीकरण और रचनात्मक अर्थव्यवस्था (Creative Economy) के विस्तार ने हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला के व्यावसायिक स्वरूप को नई दिशा प्रदान की है। पारंपरिक चित्रकला अब केवल सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक नहीं रह गई है, बल्कि कलाकारों की आजीविका, सांस्कृतिक पर्यटन, हस्तशिल्प उद्योग तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था का भी एक महत्वपूर्ण आधार बन गयी है। दूसरी तरफ़ मशीनों द्वारा निर्मित उत्पादों की प्रतिस्पर्धा, पारंपरिक तकनीकों में कमी आना, प्रशिक्षित कलाकारों की घटती संख्या तथा बदलती उपभोक्ता प्रवृत्तियाँ इस कला के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न करती हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला के व्यावसायिक स्वरूप का अध्ययन पारंपरिक कला और शिल्प ज्ञान-प्रणालियों के संदर्भ में करना है। अध्ययन में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। साथ ही, क्षेत्रीय चित्रकला विकास व प्रसार, उसके वर्तमान व्यावसायिक स्वरूप, संरक्षण की आवश्यकता और भविष्य की संभावनाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों का संरक्षण आधुनिक डिज़ाइन, डिजिटलीकरण, सांस्कृतिक पर्यटन तथा सरकारी संरक्षण योजनाओं के साथ सहयोगात्मक रूप से किया जाए, तो हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला न केवल अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रख सकती है, बल्कि स्थानीय कलाकारों के आर्थिक सशक्तिकरण एवं राज्य की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को भी नई दिशा या रूप प्रदान कर सकती है। इस प्रकार यह शोध पारंपरिक कला एवं समकालीन व्यावसायिक विकास के मध्य अंतर्संबंधों को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

मुख्य शब्द (Keywords): हिमाचल प्रदेश, क्षेत्रीय चित्रकला, पहाड़ी चित्रकला, पारंपरिक कला, शिल्प ज्ञान-प्रणाली, व्यावसायिक स्वरूप, सांस्कृतिक विरासत, रचनात्मक अर्थव्यवस्था, कला संरक्षण, डिज़ाइन नवाचार।

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय चित्रकला का इतिहास अत्यन्त प्राचीन, समृद्ध एवं बहुआयामी रहा है। प्रागैतिहासिक शैलचित्रों से लेकर आधुनिक दृश्य कलाओं तक भारतीय चित्रकला ने समाज, संस्कृति, धर्म तथा दर्शन के विविध आयामों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। भारतीय चित्रकला की यही विविधता उसे विश्व की अन्य कला परंपराओं से विशिष्ट बनाती है। इस व्यापक परंपरा में हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकलाएँ अपनी कोमल रेखाओं, प्राकृतिक रंगों, सूक्ष्म संरचना, भावाभिव्यक्ति तथा सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता के कारण विशेष स्थान रखती है।

हिमाचल प्रदेश की चित्रकला का विकास मुख्यतः विभिन्न पहाड़ी रियासतों-कांगड़ा, गुलेर, बसोहली, मंडी, बाघल (अर्की) चंबा तथा सुकेत-के संरक्षण में हुआ। इन चित्रशैलियों में धार्मिक आख्यान, कृष्ण भक्ति, रामकथा, देवी-देवताओं के चित्र, रागमाला, बारहमासा, नायिका-भेद, तथा स्थानीय लोकजीवन का अत्यन्त कलात्मक एवं संवेदनशील चित्रण मिलता है। विशेष रूप से कांगड़ा शैली ने प्रकृति और मानवीय भावनाओं के अद्भुत समन्वय के कारण विश्वव्यापी प्रतिष्ठा प्राप्त की, जबकि बाघल (अर्की) की भित्ति चित्रकला ने हिमाचल प्रदेश की राजदरबारी एवं धार्मिक कला को एक विशेष पहचान प्रदान की है।

इन चित्रकलाओं की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है कि इनका विकास **स्थानीय पारंपरिक, कला एवं शिल्प-ज्ञान प्रणालियों** के आधार पर हुआ। कलाकारों द्वारा प्राकृतिक खनिजों एवं वनस्पतियों से रंग तैयार करना, स्थानीय सामग्री का उपयोग करना, हाथ से सतह तैयार करना, तथा गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से तकनीकी ज्ञान का हस्तांतरण इस ज्ञान-प्रणाली के प्रमुख घटक थे। यह ज्ञान केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं था, बल्कि स्थानीय समाज के सांस्कृतिक अनुभव, धार्मिक आस्था, पर्यावरणीय समझ तथा कलात्मक दृष्टि का समन्वित रूप था। इसी कारण

अभिनवधारा ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL- 1
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला केवल दृश्य सौन्दर्य तक सीमित नहीं रही, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति एवं लोकज्ञान की संवाहक भी बनी।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी परिवर्तनों ने इस चित्रकला के स्वरूप को प्रभावित किया है। पर्यटन, डिजिटल प्लेटफॉर्म, वैश्विक कला बाज़ार, और सांस्कृतिक उद्योग ने कलाकारों के लिए नए अवसर उत्पन्न किए हैं। वहीं दूसरी ओर, पारंपरिक तकनीकों का क्षरण, व्यावसायीकरण की तीव्र प्रवृत्ति, मशीन निर्मित प्रतिकृतियों की बढ़ती उपलब्धता तथा युवा पीढ़ी का पारंपरिक कला से विमुख होना अनेक नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। ऐसी परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला का अध्ययन केवल कला-इतिहास के दृष्टिकोण से न करके, उसके व्यावसायिक स्वरूप तथा पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों के संदर्भ में भी किया जाए।

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि हिमाचल प्रदेश की चित्रकला पर अधिकांश शोध इसके ऐतिहासिक विकास, शैलीगत विशेषताओं एवं सांस्कृतिक महत्त्व पर केन्द्रित है। किन्तु पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियों के परिप्रेक्ष्य में इसके व्यावसायिक स्वरूप तथा वर्तमान स्थिति का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है। यही इस शोध का प्रमुख शोध-अंतर है, जिसे प्रस्तुत अध्ययन पूरा करने का प्रयास करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला के व्यावसायिक स्वरूप का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट करना है कि पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियाँ वर्तमान समय में इस कला के संरक्षण, विकास तथा आर्थिक उपयोगिता को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं। साथ ही, अध्ययन यह भी विश्लेषित करता है कि आधुनिक डिज़ाइन, नवाचार, डिजिटल विपणन, सांस्कृतिक पर्यटन तथा सरकारी संरक्षण योजनाओं के माध्यम से इस कला के सतत् विकास की क्या संभावनाएँ हैं।

यह शोध केवल कला-इतिहास का विवरण प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक विरासत एवं समकालीन व्यावसायिक संरचना के मध्य अंतर्संबंधों का विश्लेषण करता है। यही इसकी नवीनता एवं समकालीन प्रासंगिकता है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष न केवल कला इतिहास के शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होंगे, बल्कि नीति-निर्माताओं, कला-शिक्षकों, सांस्कृतिक संस्थानों, कला शिक्षकों एवं स्थानीय कलाकारों के लिए भी समान रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला एवं पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियाँ :-

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL- 1
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला भारतीय लघुचित्र परम्परा की एक विशिष्ट एवं समृद्ध धरोहर है। इसका विकास केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह स्थानीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, लोकजीवन, प्राकृतिक परिवेश, धार्मिक विश्वास और पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों का समन्वित स्वरूप है। हिमाचल की पर्वतीय घाटियों में विकसित इस चित्रकला ने स्थानीय संस्कृति को दृश्य रूप प्रदान किया तथा भारतीय कला इतिहास में एक स्वतंत्र पहचान स्थापित की है।

17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान काँगड़ा, गुलेर, चम्बा, मंडी, बसोहली, बाघल (अर्की) जैसी पहाड़ी रियासतों ने चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन रियासतों के शासकों ने कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर उत्कृष्ट चित्रों का निर्माण हुआ। भगवत् पुराण, रामायण, महाभारत, रागमाला, बारहमासा, गीतगोविन्द तथा नायिका- भेद जैसे विषय इन चित्रों की प्रमुख प्रेरणा बने। इन विषयों के माध्यम से कलाकारों ने केवल धार्मिक कथाओं का चित्रण नहीं किया, बल्कि मानवीय भावनाओं, प्रकृति के सौन्दर्य तथा आध्यात्मिक अनुभूति को भी सजीव रूप में अभिव्यक्त किया है।

हिमाचल प्रदेश की चित्रकला की सबसे बड़ी विशेषता उसकी **पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणाली** है। यह ज्ञान किसी औपचारिक विद्यालय से प्राप्त नहीं होता है, बल्कि **गुरु-शिष्य परम्परा** के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता था। वरिष्ठ कलाकार अपने शिष्यों को रेखांकन, रंग-निर्माण, अनुपात, आकृति-विन्यास, ब्रश पकड़ना, विषय चयन तथा चित्र संरचना का व्यावहारिक प्रशिक्षण देते हैं। यह प्रक्रिया केवल तकनीकी शिक्षा नहीं थी, बल्कि अनुशासन, धैर्य, सौंदर्यबोध तथा सांस्कृतिक मूल्यों के विकास का भी माध्यम थी।

चित्र निर्माण में प्रयुक्त सामग्री भी इस पारंपरिक ज्ञान का महत्वपूर्ण भाग थी। कलाकार स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों से रंग तैयार करते थे। गेरूआ, शैलाभूषण, सिंदूर (हिंगुल), शंखचूर्ण, काजल, नीला पत्थर तथा विभिन्न वनस्पतियों से प्राप्त रंगों का उपयोग किया जाता था। रंगों को स्थायी एवं चमकदार बनाने के लिए गोंद तथा जैविक बंधकों (प्राकृतिक चिपकने वाले पदार्थ) का प्रयोग किया जाता था। इन रंगों की विशेषता यह थी कि वे पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ दीर्घकाल तक सुरक्षित रहते थे। आज भी अनेक ऐतिहासिक भित्ति-चित्रों में इन प्राकृतिक रंगों की चमक इस पारंपरिक ज्ञान की वैज्ञानिकता का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

चित्रांकन की प्रक्रिया अत्यंत अनुशासित एवं क्रमबद्ध होती थी। सबसे पहले सतह तैयार की जाती थी, उसके बाद प्रारंभिक रेखांकन किया जाता है। फिर क्रमशः रंगों की परतें, सूक्ष्म अलंकरण (बारीक सजावट या नक्काशी) तथा अंतिम रेखाएँ अंकित की जाती थीं। प्रत्येक चरण में धैर्य, तकनीकी दक्षता तथा सौंदर्यबोध की आवश्यकता होती

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL- 1
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

थी। यही कारण है कि पहाड़ी चित्रकला अपनी कोमल रेखाओं, संतुलित संरचना, रंग-सामंजस्य तथा सूक्ष्म विवरण के लिए प्रसिद्ध है।

हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला में **प्राकृतिक परिवेश** का विशेष महत्व है। पर्वतीय घाटियाँ, वृक्ष, नदियाँ, फूल, पक्षी, जीव-जन्तु तथा ऋतु परिवर्तन केवल पृष्ठभूमि के रूप में नहीं, बल्कि चित्रों की भावाभिव्यक्ति का अभिन्न अंग होते हैं। विशेष रूप से काँगड़ा शैली में प्रकृति और मानवीय भावनाओं का अद्वितीय सामंजस्य दिखाई देता है। यह विशेषता हिमाचल प्रदेश की चित्रकला को अन्य भारतीय चित्रशैलियों से भिन्न बनाती है।

क्षेत्रीय चित्रकला में धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकों का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भगवान श्रीराम, शिवजी, श्रीकृष्ण, राधा, देवी दुर्गा, विष्णुजी, ब्रह्माजी तथा अन्य देवी-देवताओं के चित्र केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि भारतीय दार्शनिक परंपराओं, नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक निरंतरता के प्रतिनिधि भी हैं। कलाकार इन विषयों का चित्रण करते समय शास्त्रीय परम्पराओं (पारंपरिक /प्राचीन शैली) एवं स्थानीय लोक-विश्वास दोनों का समन्वय करते थे । इस प्रकार प्रत्येक चित्र केवल कलाकृति न होकर सांस्कृतिक दस्तावेज़ का का स्वरूप ग्रहण कर लेता है।

हिमाचल प्रदेश की चित्रकला का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष इसकी **दृश्य भाषा (Visual Language)** है। रेखाओं की कोमलता, सीमित लेकिन प्रभावी रंग योजना, संतुलित संरचना तथा भावप्रधान आकृतियाँ इसकी विशिष्ट पहचान हैं। स्त्री एवं पुरुष आकृतियों के चेहरे, नेत्रों की अभिव्यक्ति, वस्त्रों की साज-सजावट तथा प्राकृतिक पृष्ठभूमि कलाकारों की सूक्ष्म पर्यवेक्षता क्षमता को प्रदर्शित करती है। यही दृश्य भाषा इस चित्रकला को भारतीय लघुचित्र परम्परा में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

समकालीन समय में इन पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उपस्थित हुई हैं। आधुनिक औद्योगिक उत्पादन, कृत्रिम रंगों का बढ़ता प्रयोग, पारंपरिक प्रशिक्षण का अभाव तथा व्यावसायिक दबावों के कारण अनेक पारंपरिक तकनीकें धीरे-धीरे लुप्त (ख़त्म) होती जा रही हैं। युवा पीढ़ी का अन्य व्यवसायों की ओर आकर्षण भी इस प्रक्रिया को प्रभावित कर रहा है। फलस्वरूप गुरु-शिष्य परम्परा का निरंतर कमज़ोर होना, इस कला के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए गंभीर चिंता का विषय है।

इसके बावजूद अनेक कलाकार, शोधकर्ता तथा सांस्कृतिक संस्थाएँ इस पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने का प्रयास कर रही हैं। हिमाचल प्रदेश भाषा, कला एवं संस्कृति विभाग, ललित कला अकादमी, विश्वविद्यालय, संग्रहालय तथा स्वतंत्र कलाकार प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं प्रदर्शनियों के माध्यम से इस कला के संरक्षण एवं

संवर्धन में योगदान दे रहे हैं। डिजिटल अभिलेखीकरण, शोध परियोजनाएँ तथा कला शिक्षा में क्षेत्रीय चित्रकला को शामिल करने जैसे प्रयास भविष्य के लिए आशाजनक सिद्ध हो सकते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला का वास्तविक आधार उसकी पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियाँ हैं। यही ज्ञान इस कला की तकनीकी उत्कृष्टता, सांस्कृतिक प्रामाणिकता तथा सौंदर्यात्मक गरिमा का मूल स्रोत है। यदि इन ज्ञान-प्रणालियों का वैज्ञानिक संरक्षण, दस्तावेजीकरण तथा नई पीढ़ी तक प्रभावी हस्तांतरण सुनिश्चित किया जाए, तो यह चित्रकला भविष्य में भी भारतीय सांस्कृतिक विरासत की एक सशक्त एवं जीवंत परम्परा के रूप में सुरक्षित रह सकेगी।

हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला का व्यावसायिक स्वरूप एवं वर्तमान स्थिति

हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला का इतिहास केवल कलात्मक परम्परा का इतिहास नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिवर्तनों की भी एक सजीव अभिव्यक्ति है। प्रारंभिक काल में इस चित्रकला का विकास राजदरबारों, मंदिरों तथा धार्मिक संस्थानों के संरक्षण में हुआ। कलाकारों की आजीविका मुख्यतः राजाश्रय पर आधारित थी और चित्रों का निर्माण धार्मिक ग्रंथों पौराणिक कथाओं, राजपरिवार, के चित्रण तथा महलों एवं मंदिरों और मंदिरों की नक्काशी, सजावट के लिए किया जाता था। उस समय कला का उद्देश्य आर्थिक लाभ अर्जित करना नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण, धार्मिक अभिव्यक्ति और सौंदर्य सृजन था।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज एवं अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए। रियासतों के विलय के साथ राजाश्रय की परम्परा समाप्त होने लगी और कलाकारों को नए आर्थिक साधनों की तलाश करनी पड़ी। इसी काल में हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला का व्यावसायिक स्वरूप विकसित होना प्रारम्भ हुआ। कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों को कला प्रदर्शनियों, हस्तशिल्प मेलों, सांस्कृतिक आयोजनों तथा निजी संग्रहकर्ताओं के माध्यम से प्रस्तुत करना शुरू किया। धीरे-धीरे यह चित्रकला केवल सांस्कृतिक धरोहर न रहकर आजीविका का एक प्रभावी माध्यम भी बन गई।

वर्तमान समय में क्षेत्रीय चित्रकला का व्यावसायिक स्वरूप बहुआयामी हो चुका है। पारंपरिक लघुचित्रों के अतिरिक्त कलाकार कैनवास पेंटिंग, भित्ति सज्जा, स्मृति-चिह्न, कैलेंडर, ग्रीटिंग कार्ड, पुस्तक आवरण, वस्त्र अलंकरण तथा गृह-सज्जा की वस्तुओं पर भी पहाड़ी चित्रशैली के रूपांकनों का प्रयोग कर रहे हैं। इस परिवर्तन ने पारंपरिक कला को आधुनिक उपभोक्ता समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे कलाकारों को आय के नए स्रोत प्राप्त हुए हैं और क्षेत्रीय चित्रकला की उपयोगिता भी बढ़ी है।

हिमाचल प्रदेश में पर्यटन उद्योग के विस्तार ने भी क्षेत्रीय चित्रकला के व्यावसायीकरण को गति प्रदान की है। शिमला, धर्मशाला, चम्बा, कांगड़ा, कुल्लू, मनाली तथा अर्की (बागल) जैसे पर्यटन स्थलों पर आने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटक स्थानीय कला और हस्तशिल्प में विशेष रुचि रखते हैं। परिणामस्वरूप कलाकारों द्वारा निर्मित चित्र, प्रतिकृतियाँ तथा कला-आधारित उत्पाद स्थानीय बाजारों और प्रदर्शनियों में व्यापक रूप से विक्रय किए जाते हैं। इस प्रकार पर्यटन और चित्रकला के मध्य परस्पर पूरक संबंध विकसित हुआ है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ प्राप्त होता है।

21वीं शताब्दी में डिजिटल तकनीक ने चित्रकला के व्यावसायिक स्वरूप को नई दिशा दी है। अनेक कलाकार अब सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन कला मंचों के माध्यम से अपनी कलाकृतियों का प्रचार एवं विक्रय कर रहे हैं। इससे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों तक उनकी पहुँच आसान हुई है। डिजिटल माध्यमों ने कलाकारों को बिचौलियों पर निर्भर रहने की आवश्यकता कम की है, लेकिन इसके लिए तकनीकी दक्षता, विपणन कौशल तथा डिजिटल साक्षरता भी आवश्यक हो गई है। यह परिवर्तन विशेष रूप से युवा कलाकारों के लिए नए अवसर लेकर आया है।

हालाँकि व्यावसायिक विकास ने क्षेत्रीय चित्रकला को नई पहचान दिलायी है, और इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। बाजार में मशीन-निर्मित तथा छपी हुई प्रतिकृतियों की उपलब्धता के कारण हस्तनिर्मित चित्रों की प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। कम लागत वाले उत्पाद अनेक बार पारंपरिक चित्रों की बिक्री को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त, बाजार की माँग के अनुरूप त्वरित उत्पादन की प्रवृत्ति ने कई कलाकारों को पारंपरिक तकनीकों में परिवर्तन करने के लिए प्रेरित किया है। इससे चित्रों की कलात्मक गुणवत्ता, सूक्ष्मता तथा सांस्कृतिक प्रामाणिकता प्रभावित होने का खतरा उत्पन्न होता है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिमाचल प्रदेश के साथ सभी कलाकार व्यावसायिक अवसरों का समान रूप से लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। शहरी क्षेत्रों अथवा प्रमुख पर्यटन स्थलों से जुड़े कलाकारों की तुलना में दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के कलाकार सीमित बाजार, संसाधनों तथा बाज़ार व्यवस्था (विपणन) सुविधाओं के कारण अपेक्षाकृत कम आय अर्जित कर पाते हैं। इससे यह आवश्यकता स्पष्ट होती है कि सरकारी योजनाओं एवं सांस्कृतिक संस्थाओं का लाभ व्यापक स्तर तक पहुँचाया जाए।

हिमाचल प्रदेश सरकार, भाषा कला एवं संस्कृति विभाग, हस्तशिल्प विकास निगम तथा विभिन्न कला संस्थानों द्वारा कलाकारों के लिए प्रशिक्षण, कार्यक्रम, प्रदर्शनियाँ, कार्यशालाएँ तथा व्यापार (विपणन) मंच उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इन प्रयासों ने क्षेत्रीय चित्रकला को नई पहचान दी है, किन्तु इनके प्रभाव को और अधिक व्यापक बनाने

की आवश्यकता है। विशेष रूप से डिजिटल व्यापार (विपणन), ब्रांडिंग, डिज़ाइन का विकास तथा निर्यात प्रोत्साहन के क्षेत्रों में योजनाबद्ध प्रयास किए जाने चाहिए।

यह व्यावसायिक स्वरूप का समग्र मूल्यांकन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला आज **सांस्कृतिक विरासत और रचनात्मक अर्थव्यवस्था** के मध्य एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य कर रही है। यह कला केवल संग्रहालयों या महलों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिक समाज की आर्थिक गतिविधियों का भी अभिन्न अंग बन चुकी है। यद्यपि इसका सतत विकास तभी संभव है जब व्यावसायिक विस्तार के साथ-साथ पारंपरिक तकनीकों, स्थानीय ज्ञान, प्रणालियों तथा सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण समान रूप से सुरक्षित किया जाए।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला का वर्तमान व्यावसायिक स्वरूप परम्परा और आधुनिकता का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करता है। जहाँ एक ओर यह कलाकारों के आर्थिक सशक्तिकरण का साधन बन रही है, वहीं दूसरी ओर यह राज्य की सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसलिए भविष्य की विकास-नीतियों में कला संरक्षण, कलाकारों के कल्याण, डिज़ाइन नवाचार तथा डिजिटल विपणन को एकीकृत दृष्टिकोण के साथ अपनाना आवश्यक है।

विश्लेषणात्मक अध्ययन

हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि वह केवल एक कलात्मक परम्परा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक संरचना, पारंपरिक ज्ञान तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था का समन्वित स्वरूप है। इसके विकास का आधार राजाश्रय, लोकसंस्कृति तथा धार्मिक आस्था रही हैं, जबकि वर्तमान समय में इसका स्वरूप व्यावसायिक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक उद्योगों से भी जुड़ चुका है। यही परिवर्तन इस शोध का प्रमुख विश्लेषणात्मक आधार है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला की वास्तविक शक्ति उसकी **पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियाँ** हैं। प्राकृतिक रंगों का निर्माण व प्रयोग, हस्तनिर्मित तकनीकें, गुरु-शिष्य परम्परा, स्थानीय संसाधनों का उपयोग तथा सांस्कृतिक प्रतीकों की समझ इस कला की विशिष्ट पहचान है। ये केवल तकनीकी प्रक्रियाएँ नहीं, बल्कि स्थानीय समाज के दीर्घकालिक अनुभव, पर्यावरणीय ज्ञान तथा सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति हैं। इसलिए यदि इन ज्ञान-प्रणालियों का संरक्षण नहीं किया, तो चित्रकला का बाह्य स्वरूप तो सुरक्षित रह सकता है, लेकिन उसकी सांस्कृतिक आत्मा धीरे-धीरे क्षीण हो जाएगी।

विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि व्यावसायिक ने क्षेत्रीय चित्रकला को एक नई सामाजिक एवं आर्थिक पहचान प्रदान की है। पहले कलाकारों की आय का प्रमुख स्रोत केवल राजदरबार एवं धार्मिक संस्थाएँ थीं, जबकि आज प्रदर्शनियाँ, निजी कला-संग्रह, पर्यटन, ई-कॉमर्स, ऑनलाइन गैलरियाँ तथा डिजाइन उद्योग आय के नए माध्यम बन चुके हैं। इस परिवर्तन ने कलाकारों की आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ाया है और उनकी कलाकृतियों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई है।

इसके विपरीत, व्यावसायीकरण का एक नकारात्मक पक्ष भी सामने आता है। बाज़ार की माँग के अनुसार अनेक कलाकार पारंपरिक शैली में परिवर्तन करने के लिए विवश होते हैं। शीघ्र उत्पादन, कम लागत तथा अधिक बिक्री की प्रवृत्ति के कारण चित्रों की सूक्ष्मता, पारंपरिक रंग-योजना तथा मूल शैली पर प्रभाव पड़ता है। परिणामस्वरूप कई बार कलात्मक गुणवत्ता की अपेक्षा बाज़ार की पसंद को प्राथमिकता दी जाती है। यह प्रवृत्ति दीर्घकाल में क्षेत्रीय चित्रकला की मौलिकता के लिए चुनौती बन सकती है।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि हिमालय प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला में **पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक डिज़ाइन** के बीच संतुलन स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है। यदि पारंपरिक शैली को पूर्णतः अपरिवर्तित रखा जाए, तो उसका बाजार सीमित हो सकता है, वहीं यदि आधुनिक बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप अत्यधिक परिवर्तन किए जाएँ, तो उसकी सांस्कृतिक पहचान प्रभावित हो सकती है। इसलिए संरक्षण और नवाचार का संतुलित समन्वय ही इस कला के निरंतर विकास का आधार बन सकता है।

क्षेत्रीय चित्रकला के व्यावसायिक विकास का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष **सांस्कृतिक पर्यटन** है। हिमाचल प्रदेश में आने वाले पर्यटक केवल प्राकृतिक सौन्दर्य ही नहीं, बल्कि स्थानीय कला एवं संस्कृति का भी अनुभव करना चाहते हैं। यदि चित्रकला को पर्यटन नीति से प्रभावी रूप से जोड़ा जाए, जैसे— कला ग्राम (Art Villages), जीवंत प्रदर्शन (Live Demonstrations), स्थानीय कला बाज़ार और कलाकार कार्यशालाएँ विकसित किए जाएँ, तो कलाकारों को आय में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। इससे सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और स्थानीय अर्थव्यवस्था दोनों को लाभ मिलेगा।

डिजिटल माध्यमों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि आधुनिक तकनीक ने विपणन की नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। सोशल मीडिया, ऑनलाइन बिक्री और डिजिटल गैलरी मंचों ने कलाकारों को वैश्विक ग्राहकों तक पहुँचने का अवसर दिया है। परन्तु यह सुविधा केवल कलाकारों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, जो तकनीकी रूप से सक्षम हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के पारम्परिक कलाकारों को भी डिजिटल प्रशिक्षण, विपणन सहायता तथा ब्रांडिंग की जानकारी उपलब्ध कराना आवश्यक है। इससे कला के लाभों का अधिक समान वितरण संभव होगा।

शोध के दौरान भी स्पष्ट हुआ कि **कला-शिक्षा** क्षेत्रीय चित्रकला के संरक्षण में निर्णायक भूमिका निभा सकती है। वर्तमान समय में विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में स्थानीय कला परम्पराओं का अध्ययन सीमित है। यदि कला-शिक्षा में हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकलाओं, प्राकृतिक रंगों की तकनीकों तथा पारम्परिक शिल्प ज्ञान को व्यवस्थित रूप से शामिल किया जाए, तो नई पीढ़ी में इस सांस्कृतिक धरोहर के प्रति रुचि और संवेदनशीलता विकसित होगी। यह संरक्षण का सबसे प्रभावी और दीर्घकालीन उपाय सिद्ध हो सकता है।

अध्ययन यह भी इंगित करता है कि वर्तमान में उपलब्ध अधिकांश शोध में हिमाचल प्रदेश की चित्रकला में ऐतिहासिक एवं शैलीगत पक्ष तक सीमित है। इसके विपरीत, व्यावसायिक स्वरूप, सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था, पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों तथा डिज़ाइन नवाचार के संदर्भ में अभी भी व्यापक शोध की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन इस शोध-अंतर को आंशिक रूप से भरने का प्रयास करता है तथा भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए नए अध्ययन क्षेत्रों की ओर संकेत करता है।

व्यापक विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला का भविष्य केवल संरक्षण पर निर्भर नहीं है, बल्कि संरक्षण, नवाचार, शिक्षा, पर्यटन तथा व्यावसायिक विकास के समन्वित मॉडल पर आधारित होना चाहिए। सरकार, विश्वविद्यालयों, संग्रहालयों, सांस्कृतिक संस्थाओं तथा स्थानीय कलाकारों के संयुक्त प्रयासों से ही इस कला के स्थायी विकास की दिशा प्रदान की जा सकती है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला केवल अतीत की स्मृति नहीं है, बल्कि वर्तमान की रचनात्मक अर्थव्यवस्था और भविष्य की सांस्कृतिक पहचान का भी सशक्त आधार है। पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियों का संरक्षण, आधुनिक डिज़ाइन दृष्टि का विवेकपूर्ण उपयोग तथा कलाकारों का आर्थिक सशक्तिकरण-ये तीनों तत्व मिलकर इस कला के सतत विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। यही इस अध्ययन का मुख्य तार्किक परिणाम है।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला भारतीय कला परम्परा की एक विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर है, जिसका विकास स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, धार्मिक आस्थाओं तथा पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियों के संयुक्त प्रभाव से हुआ है। कांगड़ा, चंबा, मंडी, गुलेर, बसोहली और बाघल (अर्की) जैसी चित्रशैलियों ने न केवल भारतीय चित्रकला को समृद्ध किया, बल्कि स्थानीय सांस्कृतिक पहचान को भी स्थिरता प्रदान किया।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि क्षेत्रीय चित्रकला की मूल शक्ति उसकी पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों में निहित है। प्राकृतिक रंगों का निर्माण, स्थानीय सामग्री का उपयोग, गुरु-शिष्य परम्परा, सूक्ष्म रेखांकन और धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकों (चिह्नों) का ज्ञान इस कला की मौलिकता के आधार हैं। वर्तमान समय में इन ज्ञान-प्रणालियों का संरक्षण उतना ही आवश्यक है जितना कि चित्रों का संरक्षण। यदि इन पारंपरिक विधियों का व्यवस्थित, दस्तावेजीकरण एवं हस्तांतरण नहीं किया गया, तो आने वाले समय में इस कला की प्रामाणिकता प्रभावित हो सकती है।

इस विषय से यह स्पष्ट हुआ है कि वैश्वीकरण, पर्यटन, डिजाइन, नवाचार और डिजिटल माध्यमों ने हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला के व्यावसायिक स्वरूप को व्यापक बनाया है। आज कलाकार केवल पारंपरिक चित्र निर्माण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि विभिन्न कलात्मक उत्पादों, प्रदर्शनियों, ऑनलाइन मंचों तथा सांस्कृतिक पर्यटन के माध्यम से अपनी कला को नए आयाम प्रदान कर रहे हैं। इससे कलाकारों के लिए आजीविका तथा आय के नए अवसर प्राप्त हुए हैं तथा क्षेत्रीय चित्रकला की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान भी बढ़ी एवं मजबूत हुई है। दूसरी ओर अध्ययन यह भी दर्शाता है कि व्यावसायीकरण के साथ कई चुनौतियाँ भी निकल कर सामने आई हैं। बाजार की प्रतिस्पर्धा, पारंपरिक तकनीकों की क्षति, मशीन-निर्मित प्रतिकृतियों की उपलब्धता और युवा पीढ़ी का इस क्षेत्र से विमुख होना भी ऐसी समस्याएँ हैं, जिनका समाधान केवल संरक्षण योजनाओं से नहीं, बल्कि शिक्षा, नीति-निर्माण, प्रशिक्षण और कलाकारों के आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से किया जा सकता है।

इस अध्ययन या विषय का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि **पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियों तथा आधुनिक व्यावसायिक आवश्यकताओं के मध्य संतुलन स्थापित करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।** यदि पारंपरिक शैली की मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए डिज़ाइन नवाचार, सांस्कृतिक पर्यटन, डिजिटल व्यापार और रचनात्मक अर्थ-व्यवस्था से इसे जोड़ा जाए, तो यह कला न केवल संरक्षित रहेगी, अपितु स्थानीय समुदाय के सतत आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी।

अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि भविष्य में कला संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सांस्कृतिक संगठनों, संग्रहालयों और राज्य सरकार को समन्वित रूप से कार्य करना होगा। क्षेत्रीय चित्रकला पर अधिक शोध, डिजिटल अभिलेखीकरण, युवा कलाकारों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्थानीय कला ग्रामों का विकास तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शनियों का आयोजन इस कला के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रभावी उपाय सिद्ध हो सकते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला केवल अतीत की सांस्कृतिक स्मृति नहीं है, अपितु वर्तमान की रचनात्मक अर्थव्यवस्था और भविष्य की सांस्कृतिक पहचान का भी सशक्त आधार है। प्रस्तुत अध्ययन इस तथ्य को स्थापित करता है कि पारंपरिक कला एवं शिल्प ज्ञान-प्रणालियों का संरक्षण, व्यावसायिक विकास और

अभिनवधारा ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
ISSN: 2583-5149
SPECIAL EDITION -2, VOL- 1
SEPTEMBER 2026
www.ijiis-org.com
SHRIJANSHODH 2026: International Conference on Indian Knowledge Systems, Art, Design, Wellness, and Cultural Heritage Date: 29-30 August 2026

सांस्कृतिक विकास-ये तीनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इनके मध्य संतुलित तालमेल ही हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय चित्रकला के सतत् एवं समावेशी विकास का आधार बन सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Archer, W. G. (1973), *Indian Paintings from the Punjab Hills*, London, ISBN: ***978-011290181-4***.
2. *अग्रवाल, वासुदेव*, (2018), *भारतीय कला, नई दिल्ली : साहित्य मंडल।*
   ISBN: *978-81-9063246-5*
3. *हिमाचल प्रदेश भाषा, कला एवं संस्कृति विभाग*, (2022), *हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर, शिमला।*
4. IGNCA, (2019), *Traditional Knowledge System in Indian Art*, New Delhi.
5. Khandalavala, Karl, (1982), *Pahari Miniature Painting*, Mumbai: Marg Publications.
6. *कुमार, रोहित*, (2018), *बागल पैलेस की पौराणिक भित्ति चित्रकला, शिमला : हिमाचल प्रदेश भाषा, कला एवं संस्कृति विभाग*, **ISBN:** 978-8173056184.
7. Lalit Kala Academy, (2020), *Indian Traditional Paintings*, New Delhi.
8. Ministry of Culture, Govt. of India, (2021), *Annual Report*, New Delhi.
9. *भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण*, (2020), *भारतीय भित्ति चित्रों का संरक्षण, नई दिल्ली।*
10. *गोस्वामी, बी. एन.* (1999), ***पहाड़ी चित्रकला***, *नई दिल्ली : राष्ट्रीय संग्रहालय (हिन्दी संस्करण)।*
11. Randhawa, M.S. (1962), *Kangra Valley Painting*, New Delhi.
12. डोगरा, आर. डी. (2005), *पहाड़ी कला परम्पराएँ, चण्डीगढ़ : हिमालयी अध्ययन पब्लिकेशन।*
13. *शर्मा, कैलाश चंद* (2008), *बाघल और अर्की के भित्तिचित्र ।*
14. *नैगी*, *एस. एस.* (2003), *कल्चरल हेरिटेज ऑफ हिमाचल प्रदेश*, *हिमाचल प्रदेश अकादमी।*
15. *गौतम* और जोशी, *हमारा सोलन*, *प्रकाशन सहगल प्रिंटर्स एंड पैकर्स*, *सोलन, पृष्ठ संख्या*–177।
16. *कुमार, रोहित* (2009), *शोध- निबंध, सोलन जनपद के भित्तिचित्र एवं मूर्ति शिल्प – एक नान्दनिक विवेचन।*
17. *नेगी*, *मोहिनी* (2012) *हिमाचल में पहाड़ी चित्रकला विद्यालयों का विकास*, *जर्नल ऑफ इंडियन आर्ट एंड हेरिटेज*, 9(2), 55–68।
18. *ठाकुर, प्रियंका* (2018) *अर्की भित्ति चित्रों की संरक्षण स्थिति !शोध–निबंध।*